‘भारतीय सांकेतिक भाषा कोश का निर्माण’

(एंड्राइड आधारित)

एम. फिल. भाषा प्रौद्योगिकी की उपाधि हेतु

प्रस्तुत लघु शोध-सारांश

सत्र : 2016-2017

शोध-निर्देशक

डॉ. धनजी प्रसाद

असिस्टेंट प्रोफेसर

भाषाविज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग

शोधार्थी

सत्येन्द्र कुमार

एम. फिल. भाषा प्रौद्योगिकी

नामांकन संख्या : 2016/01/206/003

भाषा विज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग

भाषा विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

गांधी हिल्स, वर्धा – 442001 (महाराष्ट्र) भारत

शोध सारांश

सांकेतिक भाषा दृश्य रूप में सांकेतिक पैटर्न (हस्तचालित संप्रेषण, अंग संकेत) द्वारा संप्रेषित होती है| जिसमें विचारों को व्यक्त करने के लिए हाथ के आकार, विन्यास और संचालित बाँहों/शरीर तथा चेहरे के हावभाव का एक साथ उपयोग होता है| भारतीय सांकेतिक भाषा, भारत में विकसित व उपयोग जाने वाली सांकेतिक भाषा है|

Indian Sign Language (ISL) is a visual-spatial language which provides linguistic information using hands, arms, face, and head/body postures. The signer often uses the 3D space around his body to describe an event (Zeshan, 2003).

ऍथनोलॉग (Ethnologue) ने भारतीय सांकेतिक भाषा(Indian Sign Language) को ISO 639-3 ins कोड दिया है| इसके उपनाम आई.पी.एस.एल, आई. एस.एल, इंडो-पाकिस्तानी साईन लैंग्वेज, अर्बन इंडियन साईन लैंग्वेज दिये हैं| भारतीय सांकेतिक भाषा में बहुत ही कम काम व रिसोर्स जनरेशन हुआ है| रामकृष्णमिशन विश्वविद्यालय और सी. बी. एम. इंटरनेशनल जोकि अपने आप में अनूठा और पहला भारतीय सांकेतिक भाषा का शब्दकोश इंडिया सांकेतिक भाषा डिक्शनरी (Indian Sign Language Dictionary) २००१ में लेकर आये। उनके अनुसार ४२% संकेत (साइन) पूरे भारतवर्ष में कॉमन है।

प्रस्तुत शोध 'भारतीय सांकेतिक भाषा कोश का निर्माण (एंड्राइड आधारित)' के प्रथम अध्याय में सांकेतिक भाषा की परिभाषा, इसके प्रमुख धटकों के बारे में भाषा वैज्ञानिक वर्णन किया गया है| सांकेतिक भाषा के प्रयुक्त घटक कौन-कौन से हैं? भारतीय सांकेतिक भाषा का परिचय व स्वरुप की भी विस्तार से विवेचना की गई है| और यह बोलने वाली व अन्य सांकेतिक भाषाओं से किस-२ स्तर पर भिन्न है| प्रस्तुत शोध का अध्याय दो, 'साहित्य पुनरवलोकन' है| 'साहित्य पुनरवलोकन' अध्याय में सांकेतिक भाषा और भारतीय सांकेतिक भाषा पर पूर्व में

हुए शोधों की जानकारी व विवेचना की गई है| इस अध्याय में भारतीय सांकेतिक भाषा के रिसोर्स जनरेशन की दिशा में हुए शोधों की जानकारी भी दी गई है|

अध्याय तीन में भाषा अध्ययन में शब्दकोश की उपयोगिता, शब्दकोशों के प्रकार, ग्लोबिश का महत्व, ग्लोबिश शब्द सूची व एंड्राइड आपरेटिंग सिस्टम के विषय में विस्तार से चर्चा की गई है| अध्याय चार 'शोध प्राविधि' है| प्रस्तुत शोध के 'शोध प्राविधि' अध्याय में शोध के चरण व अपनाई गई विधि का वर्णन किया गया है| इसमें डाटा कलेक्शन, ग्लोबिश शब्द सूची का अनुवाद, सम्प्रेषण अनुप्रयोग में डाटा मैपिंग आदि का समावेश है| प्रस्तुत शोध के अध्याय पांच 'एंड्राइड आधारित भारतीय सांकेतिक भाषा कोश का विकास' में भारतीय सांकेतिक भाषा कोश के अनुप्रयोग का विकास को बताया गया है| अनुप्रयोग का नाम सम्प्रेषण रखा गया है| ये अनुप्रयोग भारतीय सांकेतिक भाषा कोश के रूप में किस तरह कार्य करता है का विवरण, अनुप्रयोग का कोड व अनुप्रयोग के रियल टाइम स्क्रीनशॉट को भी दर्शाया गया है| उपसंहार जो की इस प्रस्तुत शोध का अंतिम अध्याय है में प्रस्तुत शोध का निष्कर्षों को दर्शाया गया है| उपयोगिता की दृष्टि से 'सम्प्रेषण' अनुप्रयोग किस तरह से भविष्य में भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करने वालों के लिए, सामान्यजन के लिए, कार्य स्थल और शैक्षणिक संस्था में बेहतर वातावरण बनाने में सहायक सिद्ध हो सकता है|